नागार्जुन की कविता में राजनीतिक बोध

डॉ. संतोष कुमार 'निराला

नागार्जुन की कविताओं का रुप–रंग और आत्मा को देखकर यह मानना पड़ेगा कि यद्यपि कविता सामाजिक और राजनीतिक घटनाक्रम का सीधा और स्थूल इतिहास नहीं है, फिर भी आजादी के बाद से लेकर आखिरी दशक तक का इतिहास और उसके साथ–साथ जनता की भावधारा का इतिहास किसी एक ही कवि में यदि कोई पढ़ना चाहे तो वह नागार्जुन की कविताएँ पढ़ सकता है।

साहित्य और सौंदर्यबोध की नई कसौटी की आवश्यकता के मद्देनजर कविता के प्रचलित मुहावरे में नागार्जुन ने बहुत महत्वपूर्ण तोड़फोड़ की। 1946 में आजादी के ठीक पहले की नागार्जुन की एक कविता है–' यहाँ एक तरह की आकांक्षा, एक कामना व्यक्त की गई है जहाँ छायावादी प्रभाव तो है लेकिन छायावादी भावभूमि नहीं। लेकिन आजादी के ठीक बाद 1947 में ही नागार्जुन की यह कामना एकदम भिन्न किस्म की स्थितियों से रू–ब–रू होती है।